भारतीय ज्ञान परम्परा और साहित्य

डॉ० स्नेहा कुमारी
विषय : हिन्दी
राँची झारखण्ड

शोध सार :

भारत एक ऐसा देश है जहाँ संस्कृति सभ्यता और ज्ञान की नदियाँ हजारों वर्षों से निरन्तर बह रही हैं। यहाँ की ज्ञान परम्परा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह लोगों के जीवन आचार–व्यवहार, उत्सव, कला, संगीत और साहित्य में रची बसी है। भारतीय ज्ञान परम्परा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाना रहा है। हमारे यहाँ वेद से लेकर आधुनिक साहित्य तक, हर युग में रचनाकारों ने ज्ञान और मूल्यों को इस तरह प्रस्तुत किया कि वह सामान्य व्यक्ति भी समझ सके। यही कारण है कि भारत की साहित्यिक धरोहर आज भी लोगों के दिलों में जीवित है।

भूमिका :

व्यक्ति के सर्वागीण विकास राष्ट्रीय उन्नति तथा सभ्यता एवं संस्कृति के उत्थान के लिए शिक्षा आवश्यकता है। भारत के महान शिक्षकों ने शिक्षा के इस गहन महत्व को समझा था। प्राचीन काल से ही भारत अपने धार्मिक ग्रंथो संस्कृति और बहुभावाद के लिए प्रसिद्ध रहा है। ये तीनों गुण सिर्फ शब्द नहीं बल्कि हर भारतीय का हिस्सा है जो उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिले है। भारतीय संस्कृति की समझ, संरक्षण और संवर्धन के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा का ज्ञान आवश्यक है। इसलिए इसे राष्ट्रीय शिक्षानीति–2020 की रूपरेखा में भी उचित रूप में प्रतिबिंबित करने की आवश्यकता है। यह भी सत्य है कि भारतीय ज्ञान परम्परा की ही देन है कि ''जातिगत भेदभाव एवं छुआछूत बालविवाह, बहुविवाह, महिलाओं में पर्दा व्यवस्था तथा उनके विदाध्ययन पर प्रतिबंध एवं समुद्रयात्रा पर रोक जैसी बुराइयों को यहाँ कभी सैद्धातिक स्वीकृति नहीं मिली वरन् हिन्दू समाज के ही स्वयं प्रेरित लोग इनके विरूद्ध समय–समय पर डटकर खड़े होते रहे और भारत की ज्ञान परम्परा को गतिमान बनाए रखा। इसी के साथ सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़ियों के विरूद्ध लड़ने की परम्परा भी विकसित होती गई। सामाजिक विबमता के विरूद्ध लड़ई लंबी चली।''[1]

भारतीय ज्ञान परम्परा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिमें ज्ञान और विज्ञान लैकिक और पारलौंकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केन्द्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्म–निर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। भारतीय ज्ञान परम्परा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म अर्थ, काम, मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था। जब सारा विश्व अज्ञान

रूपी अंधकार में भटकता था, तबं सम्पूर्ण भारत के मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मानव को पशुता से मुक्त कर श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर पूर्ण मानव बनाते थे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, ''हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनष्यु अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।''(2)

भारतीय ज्ञान परम्परा का आरम्भ वैदिक काल से माना जाता है। ऋग्वेद के मंत्र, यजुर्वेद के यज्ञ–विधान, सामवेद के गीत और अर्थवेद के चिकित्सा व ज्योतिष संबंधी मंत्र–ये सब मिलक्कर बताते हैं कि हमारे पूर्वज केवल पूजा–पाठ करने वाले लोग नहीं थे बलिक वे विज्ञान चिकित्सा, गणित, राजनीतिक और दर्शन में भी गहरी समझ रखते थे। उपनिषदों में गहरे दार्शनिक विचार मिलते है। 'मैं ही ब्रह्म हूँ। यह वाक्य हमें आत्मविश्वास और आत्म–ज्ञान देता है। भारतीय मनीषी 'वसुधैव कुटुम्बकम' की बात करते रहे है।

'महोपनिषद्' के पष्टम अध्याय का 71वाँ मन्त्र है–

''अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्
उदारचरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम्''(3)

अर्थात् यह अपना है और यह पराया है ऐसी गणना छोटे हृदय वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वालों का तो पृथ्यी ही संसार है। वेदों को ईश्वर की वाणी माना गया। इनमें न कवेल धार्मिक मंत्र है, बल्कि खगोल विज्ञान, गणित और चिकित्सा के भी सूत्र मिलते है। उपनिषद् में, आत्मा, ब्रह्म और संसार के रहस्यों को समझाने के लिए अनेक सुंदर नैसर्गिक उदाहरण प्रस्तुत किए गए है। रामायण और महाभारत जीवन जीने का सार बताते है। रामायण के 'राम' हमें मंर्यादा और धैर्य सिखाते है, वहीं महाभारत के 'कृष्ण' कर्म नीति और कूटनीति का ज्ञान देते है। इसी तरह संस्कृत साहित्य में कालिदास को 'कवि–कलानिधि' कहा जाता है। उनके नाटक 'अभि ज्ञानशाकुंतलम्' में प्रेम त्याग औ प्रकृति की सुन्दरता का अद्भुत वर्णन है। भवभूति के नाटकों में करूणा और साहस की प्रेरणा है। हमारे दर्शन भी छह है, यथा–सांख्या योग, न्याय, वैशेषिक मीमांसा और वेदांत। ये सभी जीवन के हर पहलू की चर्चा करते है। जीवन जीने की सही समझ देते है।

भारतीय ज्ञान और साहित्य का संबंध ऐसा है जैसे आत्मा और शरीर का। ज्ञान बिना साहित्य खोखला है और साहित्य बिना ज्ञान अधूरा है। भारतीय साहित्य की यह विशेषता रही है कि इसमें अत्यंत कठोर या कहें जो समझ से परे रहस्यवादी विचार भी कहानी, कविता, गीत, नाटक के रूप में प्रस्तुत किए गए है, जिससे एक सीधा–साधा सरल हृदय वाला मनुष्य में समझ सके और उसे जीवन में उतार सके। प्रो. राकेश सिन्हा लिखते हैं– ''जब हम भारत की ज्ञान परम्परा की बात करते हैं तो हम किसी के विरूद्ध नहीं हैं किसी को हटाना नहीं चाहते है हम किसी को बहिष्कृत (Exclude) नहीं करना चाहते हैं, हम सब समावेशी (Inclusive) होना चाहते है....

.वैदिक काल से लेकर आज तक हमने पृथ्वी को अपना भूगोल माना और ब्रह्मांड को अपनी चेतना का कारण और परिणाम दोनों माना।'''[4]

तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' में राम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहा गया तथा राम को जन–जन के आराध्य देव के रूप में प्रतिष्ठित किया। वास्तव में तुलसी के द्वारा ही राम के अवतार के पूर्ण प्रतिष्ठा हुई। इसी प्रकार हिन्दी साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण का विशिष्ट महत्व है, उनके बाल रूप से लेकर गीता के उपदेशक योगेश्वर रूप की अनेक झाकियाँ साहित्य एवं दर्शन में मिलती हैं। वे भगवान विष्णु के पुर्णावतार माने गये हैं।

इसी प्रकार हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परम्परा की धारा प्रवाहित होती रही है। यह ज्ञान की परम्परा रामचरितमानस, सूरसागर, भ्रमरगीत, भँवरगीत, पदमावत, विनयपत्रिका, रामचंद्रिका, जैसे महाकाव्यों तथा काव्यों से होती हुई नाटकों, रूपकों के माध्यम से आज तक बह रही है। हिन्दी साहित्य की मूल चेतना भारतवर्ष को एक राष्ट्र के रूप में देखने की है। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है, उनमें हिन्दी साहित्य प्रमुख है। भारत के भूगोल को महाकाव्यों ने इस रूप में प्रस्तुत किया है कि प्रत्येक नागरिक के मन में सम्पूर्ण देश के प्रति आस्था उत्पन्न हो जाती है। वह अपनी क्षेत्रीय भावना को राष्ट्र के प्रति प्रेम की निश्छलता के साथ प्रस्तुत करना चाहती है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने कहा है–

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन–निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।''[5]

हिन्दी साहित्य ने पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण के भेदभाव को मिटाकर प्रत्येक भारतीय को भारतीय होने का स्वाभिमान प्रदान किया। समस्त संसार को हम आर्य बनाएँ वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात सारी पृथ्वी ही हमारा परिवार है, इत्यादि सुन्दर उक्तियों के माध्यम से मानव मात्र के प्रति आत्मीयता का भाव उत्पन्न कर दिया है। इसी उद्देश्य से हिन्दी साहित्य अध्ययन की अनुभूति की जाती है। इसके अध्ययन से हम अपने देश की प्राचीन संस्कृति को समझ सकते हैं। पूर्वजों ने हिन्दी साहित्य के रूप में इनको ऐसी सम्पत्ति दी है, जिसका लाभ अनन्तकाल तक मिलता रहेगा।

हिन्दी साहित्य के रूप में काव्य, दर्शन, धर्मशास्त्र, राजनीति, ज्योतिष तथा अन्य क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान–विज्ञान और हिन्दी भाषा की अभिव्यक्ति की सुन्दरता का आनंद प्राप्त करते है। अतः हम कह सकते है कि भारतीय ज्ञान परम्परा और साहित्य का संबंध अटूट है। यह परम्परा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं। बल्कि लोगों के जीवन में बसी हुई है। आज हमें आवश्यकता है कि इस धरोहर को सुरक्षित रखे नई पीढ़ी को इससे जोड़े और दुनिया को यह दिखा कि भारत केवल इतिहास का देश नहीं बल्कि ज्ञान और मानवता का जीवित केन्द्र है।

संदर्भ सूची

1. गोपाल, कृष्ण : 'भारत की संत परम्परा और सामाजिक समरसता' मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, पृ.–2
2. सिरोला, देबकी : 'भारतीय ज्ञान परम्परा एवं शिक्षा' कुणाल बुक्स, नई दिल्ली, पृ.सं.–79
3. अग्निहोत्री, शशिप्रभा : 'राष्ट्र–चेतना के चरण' नार्दन बुक सेंटर', नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ सं.–287
4. सिन्हा, राकेश : भारतीय ज्ञान परम्पराः औपनिवेशिक मानसिकता स्थानीय अकर्मण्यता, सेंटर फॉर स्टीडी' ऑफ डेमोक्रेसी एण्ड कल्चर, नई दिल्ली, 2023, पृष्ठ सं.–20
5. शर्मा, रामविला : भारतेन्दु ग्रंथावली, खण्ड–1, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ सं. –45

पत्राचार पता :

C Correnspondens Address
Dr. Sneha Kumari
C/o Nageshwar Pandit
New Lake Avenue, Gali no.-2,
Behind Cambrian School,
Kanke Road, Ranchi, Jharkhand, Pin-834008